दृष्टि The Vision

# हिन्दी साहित्य

# HINDI LITERATURE

**DTVF/18(JS)–HL-HL1**

| निर्धारित समयः तीन घंटे<br>*Time allowed: Three Hours* | अधिकतम अंकः 250<br>*Maximum Marks: 250* |
|---|---|

नाम (Name): Ravi Kumar Sihag

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 19/06/18 1

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

| 1 | 1 | 3 | 9 | 4 | 7 | 9 |
|---|---|---|---|---|---|---|

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Ravi Sihag

## Question Paper Specific Instructions

***Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:***

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

*The number of marks carried by a question/part is indicated against it.*

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

*Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly*

*Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.*

*Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.*

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
*Evaluator (Code & Signatures)*

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
*Reviewer (Code & Signatures)*

## मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

### परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

| उत्तर का स्तर (Standards of Answer) | सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.) | वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay) |
|---|---|---|
| उत्कृष्ट (Excellent) | 51-60% | 61-70% |
| बहुत अच्छा (Very Good) | 41-50% | 51-60% |
| अच्छा (Good) | 31-40% | 41-50% |
| औसत (Average) | 21-30% | 31-40% |
| कमज़ोर (Poor) | 0-20% | 0-30% |

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम ज़रूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेज़ों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के सदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

## Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

### Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

## SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) 'कन्नौजी' बोली का परिचय

'कन्नौजी' पश्चिमी हिन्दी उपभाषा की एक मुख्य बोली है जिसका क्षेत्र उत्तरप्रदेश के कन्नौज, प्रयाग, इलाहाबाद आदि क्षेत्रों में होता है।

विशेषताएँ

(क) व्यंजनों का द्वित्वीकरण एक उल्लेखनीय विशेषता है

बादशाह- बास्साह

(ख) अल्पप्राणिकरण की प्रवृत्ति पाई जाती है

हाथ- हाँत

(ग) अनुनासिकता की प्रवृत्ति विद्यमान जैसे- पैंसा, हाँत

(घ) ऐ व औ का दोनों रूपों में प्रयोग पैसा, पैसा

(ङ) शब्दों के अंत में अकारांत की प्रवृत्ति जो कि अवधी से प्रभावित लगती है



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राम - रामु, किसान किसानु

(च) उ, ऊ आदि में भेद स्पष्ट दिखलाई पड़ता है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) प्रारंभिक खड़ी बोली और खुसरो की कविता

यूँ तो खड़ी बोली का प्रारम्भिक स्वरूप सिद्ध-नाथ परंपरा में दिखलाई पड़ता है परन्तु खुसरो के समय एकबारगी खड़ी बोली का विकसित रूप दिखलाई पड़ती है।

अमीर खुसरो की 'पहेलियाँ', 'दो सुखने' खड़ी बोली के वर्तमान स्वरूप का दर्शन कराते हैं और 'मुकरियों' में भी खड़ी बोली का स्वरूप दिखलाई पड़ता है। उदाहरण-

"एक थाल मोती से भरा, सबके सिर औंधा धरा
चारों ओर वह थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे"

प्रस्तुत पंक्तियों में न केवल ~~ख~~ शाब्दिक स्तर पर अपितु व्याकरणिक स्तर पर भी खड़ी बोली के तत्व विद्यमान हैं। खुसरो की रचनाएँ देखकर शुक्ल जी को भी कहना पड़ा -

"क्या उस समय तक भाषा घिसकर इतनी चिकनी हो गई थी, जितने खुसरो की पहेलियों में मिलती है।"

खुसरो की रचनाओं में खड़ी बोली के आने



Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का कारण भी यह है कि दुसरो का समय तत्कालीन कौरवी एवं अरबी, फारसी परंपरा के मिश्रण का समय था, जो कि आज के वातावरण से पूर्णतः मेल खाता है, तभी दुसरो इतने भाषाओं प्रयोग कर पाये।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 'भोजपुरी' बोली का परिचय

'भोजपुरी' बोली बिहारी उपभाषा वर्ग की एक महत्वपूर्ण बोली है। न केवल प्रयोक्ताओं की उल्लेखनीय संख्या बल्कि भारत एवं विदेशों में उपलब्ध लोकसाहित्य की दृष्टि से भी यह एक महत्वपूर्ण बोली है। इसका प्रभाव क्षेत्र में छपरा, चंपारण (बिहार) एवं गोरखपुर, बनारस (उत्तरप्रदेश) जैसे जिले आते हैं।

मुख्यतः अवधी से साम्य रखने वाली इस बोली की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं-

ध्वनि स्तर पर

(क) 'ड़' का 'र' में परिवर्तन

पड़ना - परा

(ख) शब्दों के ठकरांत होने की प्रवृत्ति

राम - 'रामु'

(ग) 'ण' के स्थान पर न होने की प्रवृत्ति

मरण - मरन

(घ) 'ऐ' व 'औ' का संध्यक्षरों के रूप में प्रयोग

कौन - कउन



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्याकरणिक स्तर पर

(क) वचन - बहुवचन बनाने हेतु लोगन, जन आदि प्रत्ययों का प्रयोग

(ख) सर्वनाम - हमरा, तुमरा, ई, ऊ

(ग) क्रिया रूप -
वर्तमान - 'त' प्रत्यय - करत
भूतकाल - 'ल' प्रत्यय - चलल
भविष्य - 'ब' प्रत्यय - खाइब

(घ) स्त्रीलिंग शब्दों के इकारांत होने की प्रवृत्ति

इस प्रकार उल्लेखनीय विशेषताओं के चलते भोजपुरी के 'भाषा' बनाने की मांग भी उठती है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) हिंदी भाषा का क्षेत्र

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिंदी भाषा का क्षेत्र एक व्यापक अवधारणा है जिसमें न केवल हिंदी बोलने, समझने, लिखने वाले क्षेत्र आते हैं, अपितु अन्य भी कई क्षेत्र इसमें समाहित हैं।

सर्वप्रथम, उन क्षेत्रों की बात करें जहाँ हिंदी प्राथमिक भाषा है अर्थात् बोलने, लिखने समझने में प्रयुक्त होती है। यह क्षेत्र उत्तर में अम्बाला से लेकर पूर्व में पूर्णिया तक एवं बद्रीनाथ-केदारनाथ से लेकर खंडवा (मध्यप्रदेश) तक विस्तृत है। भारत के उत्तरी भाग के दस राज्य इसमें समाहित हैं।

द्वितीय, हिंदी भाषा के क्षेत्र में उन क्षेत्रों को समाहित किया जाता है जहाँ हिंदी समझी जाती है एवं लिखी भी जाती है एवं क्षेत्रीयक भाषा के रूप में विद्यमान है। मराठी, गुजराती, आसामी, उड़िया, बंगाली आदि भाषा वाले क्षेत्र इस वर्ग में आते हैं।

इनके अतिरिक्त ~~वह~~ वह क्षेत्र भी हिंदी


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

क्षेत्र कहलाता है जहाँ हिंदी अध्ययन, शोध एवं पाठ्यक्रम की भाषा है, इसमें अमेरीका, रूस, ब्रिटेन आदि देश हैं जहाँ के विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है

इस प्रकार इन संपूर्ण क्षेत्रों को मिलाकर हिंदी भाषी क्षेत्र का निर्माण होता है एवं कुल मिलाकर हिंदी के प्रयोक्ताओं की संख्या एक अरब को पार कर चुकी है

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) सिद्ध साहित्य में प्रारंभिक खड़ी बोली का स्वरूप

खड़ी बोली का प्रारंभिक परिचय हमें तो पुरानी हिन्दी के आरम्भ के साथ होता है परन्तु उससे पहले की सिद्ध रचनाओं में भी खड़ी बोली के कुछ लक्षण बीज रूप में दिखलाई पड़ते हैं।

देश के पूर्वी भाग में सिद्धों (संख्या लगभग 84) ने अपनी सांप्रदायिक भावनाओं के प्रसार हेतु सिद्ध साहित्य रचा, जिनमें सरहपा, कण्हपा का नाम उल्लेखनीय है।

सरहपा की रचनाओं 'दोहा' व 'चर्यापद' में खड़ी बोली के कुछ शब्द दिखलाई पड़ते हैं जैसे -

"पंडित सअल सत्थ बक्खाणअ
देहहिं बुद्ध बसन्त ण जाणअ"

इस सूक्ति में 'पंडित', 'सत्थ', 'बुद्ध' जैसे शब्द खड़ी बोली में भी ज्यों के त्यों दिखलाई पड़ते हैं। साथ ही 'न' के स्थान पर 'ण' का प्रयोग जो कि खड़ी बोली की उल्लेखनीय विशेषता है, यहाँ दिखाई पड़ता।



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है।

ध्यातव्य है कि सिद्ध रचनाओं में खड़ी बोली व्याकरणिक स्तर पर विद्यमान न होकर केवल शाब्दिक स्तर पर ही विद्यमान है। एक अन्य उदाहरण द्वारा इसे और स्पष्ट रूप में समझ सकते हैं।

"जहि मण पवण न संचरइ, रवि ससि णाह पवेस
तहि वढ चित्त विसाम करु, सरहे कहिउ उएस"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) मध्यकाल में प्रयुक्त साहित्यिक ब्रजभाषा में निहित गंभीर कलात्मकता के कारणों का अन्वेषण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी भी रचना में कलात्मकता दो कारणों से विद्यमान होती है (क) कवि की कलात्मक क्षमता एवं भाषा में निहित कलात्मकता। हमें यह तो ज्ञात है कि मध्यकाल में सूरदास की प्रतिभा ने चलती ब्रज को उठाकर साहित्य भाषा में रूपान्तरित कर दिया। परन्तु, प्रश्न यह है कि क्या ब्रजभाषा में निहित कलात्मकता को केवल कवि क्षमता का परिणाम माना जाये? तार्किक मंथन करने पर भाषावैज्ञानिक मानते हैं कि यह कवि क्षमता के साथ-साथ ब्रजभाषा में निहित विशेषता है।

## ब्रजभाषा में निहित कलात्मकता के कारण

(क) भौगोलिक-सांस्कृतिक कारण : ब्रजभाषा ब्रजमंडल की भाषा है जिसमें मथुरा, वृंदावन, गोकुल आदि आते हैं। भौगोलिक रूप से यह इलाका यमुना नदी के पास में होने के कारण उर्वर एवं धन धान्य सम्पन्न रहा है। इसके अलावा भगवान


Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

श्रीकृष्ण के अवतार से जुड़ने के कारण भी यहाँ की भाषा में परिवर्तन आये। भगवान राम का ~~यहाँ~~ जीवन जहाँ 'संघर्ष का जीवन' है, वहीं श्रीकृष्ण का जन्म 'मानव की कला' है। श्रीकृष्ण पूर्ण अवतार माने गये हैं, जो सभी कलाओं में निपुण हैं।

अतः इस प्रकार की परिस्थितियों में संभव ही नहीं है कि जनता के राजनीतिक उत्कर्ष से संतुष्ट हो जाये। आनंद की खोज ही ब्रजभाषा जैसी भाषा को जन्म देती है।

(ख) साहित्यिक कारण :- महाप्रभु वल्लभाचार्य के फटकारने के बाद सूरदास ने ब्रजभाषा में कृष्ण भक्ति के पद लिखना शुरू किया। सूरदास ने चलती ब्रज भाषा में शृंगार, सौन्दर्य, वात्सल्य के ऐसे पद लिखे कि ब्रजभाषा इस प्रकार के विषयों हेतु रूढ़ हो गई।

सूरदास के अंधे होने के कारण उनका 'विभाव पक्ष' कमज़ोर था। अतः विभिन्न विषयों पर एक साथ लिखने के बजाय


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उन्होंने एक ही विषय पर अनेक तरीकों से लिखा। इसी कारण उनके काव्य का अप्रस्तुत विधान बहुत मजबूत है। उत्प्रेक्षा, उपमा का तो उन्होंने बहुतायत में प्रयोग किया है।

सूरदास के बाद उत्तर-मध्यकाल अर्थात् रीतिकाल में कविवर बिहारीलाल जैसे रचनाकारों ने तो साहित्य को कला से जोड़कर उसे संगीतात्मकता से गुणों से परिपूर्ण कर दिया।

"कहत, नटत, रीझत, खीजत, मिलत, खिलत लजियात
~~भरे भौन मे करत है, नैनहु ही सो बात~~"

(ग) ऐतिहासिक कारण :- कृष्ण के मिथक का प्रयोग करना ब्रज की कलात्मकता का एक कारण है। इससे पहले विद्यापति एवं चैतन्य जैसे कवि कृष्णभक्ति में श्रृंगार एवं सौन्दर्य की रचनाओं का कौशल दिखा चुके थे।

दूसरा कारण यह है कि भक्तिकाल के कृष्णभक्त कवि मंदिरों में रहकर रचना करते थे। बाह्य आर्थिक सामाजिक जीवन से अनजान रहकर न तो उन्हें तुलसी की


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तरह गरीबी विचलित करती थी, न ही कबीर की तरह सांप्रदायिकता। अतः कलात्मक रचनाएँ करने में सक्षम हुए।

तीसरे, तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों ने भी भाषा पक्ष की कलात्मकता में योगदान दिया। सामंती, युद्धरहित वातावरण में राजाओं की श्रृंगारप्रियता ने ब्रजभाषा में कलात्मक प्रयोगों को प्रोत्साहित किया। एक ध्वन्यात्मक प्रयोग निम्न है -

"झहरि रही झनक झनक तार ताननि की
झझक झनक तामे झनक घुरीनकी"

इस प्रकार उपर्युक्त कारणों ने ब्रजभाषा में कलात्मकता का उभार कर इसे तत्कालीन समाज के साहित्य पर चमत्कारपूर्ण प्रभाव डालने में सक्षम बनाया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'खड़ी बोली' बोली की भाषिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'खड़ी-बोली' जिसका मूल नाम 'कौरवी' था, प्राचीन काल में स्थित महाजनपद 'कुरु' प्रदेश की भाषा थी। यह क्षेत्र वर्तमान में भारत के उत्तरी क्षेत्र में राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल, दिल्ली, पंजाब आदि के कुछ क्षेत्रों में विद्यमान है। खड़ी बोली पश्चिमी क्षेत्र की शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुई है। इसकी प्रमुख भाषिक विशेषताएँ निम्न हैं -

ध्वनि संबंधी विशेषताएँ

(क) 'ह' वर्ग प्रधान भाषा

(ख) 'ड़' की जगह 'ड' का प्रयोग
पड़ा - पड्डा।

(ग) 'न' के स्थान पर 'ण' का प्रयोग।
कौन - कौण

(घ) 'क्र' के स्थान पर 'र' का प्रयोग
कृपा - क्रपा

(ङ) शब्द में मध्य में उपस्थित व्यंजन के द्वित्वीकरण की प्रवृत्ति


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जैसे- चाल्लला, चान्च्या

(घ) शब्द के आदि स्वर के विलुप्तिकरण की प्रवृत्ति - जैसे
इकट्ठा - कट्ठा

(ङ) 'ल' के स्थान पर मराठी भाषा के उद्भव हुए 'ळ' का प्रयोग जैसे -
बालक - बाळक

(ज) अल्पप्राणीत्व की प्रवृत्ति - हाथ - हात

व्याकरण संबंधी विशेषताएँ

(क) संज्ञा के स्तर पर स्वरांत प्रतिपदिकों की उपस्थिति

(ख) सर्वनाम विशेषता -

| | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| उत्तम पुरुष - | मैं, मने | हम, म्हारा |
| मध्यम पुरुष - | तुम, तुम्ने | तुम्हारा |
| अन्य पुरुष - | उस्ने, | |

इसके अलावा, जिनने, उनने आदि सर्वनाम भी प्रचलित हैं।

(ग) लिंग व्यवस्था : पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने हेतु ई, अन, नी जैसे प्रत्ययों का इस्तेमाल
शेर - शेरनी, माली - मालन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) वचन व्यवस्था :- द्विवचन नहीं पाया जाता
~~पुरु~~ पुल्लिंग एकवचन को बहुवचन बनाने के लिए यदि ध्वनि आकरांत है तो एकरांत में परिवर्तन शेष ध्वनियाँ अपरिवर्तित
बेटा - बेटे
- स्त्रीलिंग एकवचन से बहुवचन बनाने में मुख्यतः याँ, इयाँ आदि प्रत्ययों का प्रयोग
नदी - नदियाँ, किताब - किताबाँ, किताबें

(ङ) कारक व्यवस्था
कर्त्ता - ने, नैं (सकर्मक भूतकाल में)
संबंध - का, कै, कैर
अधिकरण - में, पे, पर
करण - से, तै

(च) क्रिया रूप :- वर्तमान - 'ऊ', 'ऊँ' रूप
- आऊँ हूँ
भूतकाल - चाल्या, गया - या रूप
भविष्यकाल = जावैगा - गा रूप

इस प्रकार उपर्युक्त विशेषताओं से खड़ी बोली ने मानक हिंदी की विशेषताओं में सबसे अधिक योगदान दिया है।


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अपभ्रंश के अध्ययन के प्रमुख स्रोतों का उल्लेख करते हुए अपभ्रंश के प्रमुख भेदों पर प्रकाश डालिये। 15

मध्यकालीन आर्यभाषाओं का तीसरा स्तर अपभ्रंश को माना जाता है। वैदिक संस्कृत की परंपरा पालि, प्राकृत से होते हुए 7वीं से 9वीं शताब्दी तक अपभ्रंश में पर्यवसित हो गई। मुख्यतः इस शब्द का अभिप्राय 'भ्रष्ट भाषा' होता है अर्थात- वह भाषा जो संस्कृत शब्दों के भ्रष्ट उच्चारण से बनी है।

स्रोतों की दृष्टि से सिद्ध साहित्य में सरहपा, कण्हपा की रचनाएँ 'दोहा' एवं चर्यापद, विभिन्न रासो साहित्य जैसे 'बीसलदेव रासो', संदेस रासक, नाथ साहित्य में गोरखनाथ मच्छंदरनाथ की रचनाएँ प्रमुख है इसके अलावा परिनिष्ठित अपभ्रंश में प्रमुखतः जैन कवियों की रचनाएँ आती हैं जिसमें प्रमुख कवि हेमचन्द्र, पुष्पदंत, स्वयंभू आदि कवि हैं एवं रचनाओं की दृष्टि से 'णायकुमार चरिउ', 'महापुराण', जसहर चरिउ, चंदनबाला रास, आदि प्रमुख रचनाएँ है।

उल्लेखनीय है कि कालिदास के नाटकों

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के निम्नवर्गीय पात्र भी यही भाषा बोलते हैं।

**अपभ्रंश के प्रमुख भेद** इन भेदों के वर्णन में दो प्रकार के विचार प्रचलित हैं। प्रथम वे जो अपभ्रंश को भाषिक विकास की स्थिति मानते हैं। इसमें 'विष्णुधर्मोत्तर' ने अपभ्रंश के असंख्य भेदों का वर्णन किया है। मार्कण्डेय ने भी अपभ्रंश के 27 भेदों के होने की बात स्वीकारी है।

इस दृष्टि से प्रमुख योगदान डॉ० धीरेन्द्र वर्मा का है जिन्होंने अपभ्रंश को 5 भेदों में बांटकर विकास का उल्लेख किया है- जैसे

महाराष्ट्री प्राकृत - महाराष्ट्री अपभ्रंश।
मागधी प्राकृत - मागधी अपभ्रंश।
अर्धमागधी प्राकृत - अर्द्धमागधी अपभ्रंश।
पैशाचिक प्राकृत - पैशाचिक अपभ्रंश
शौरसेनी प्राकृत - शौरसेनी अपभ्रंश।

द्वितीय श्रेणी में वे विश्लेषक आते हैं जो अपभ्रंश को भाषा का दर्जा देते हैं। इसमें प्रमुखतः मार्कण्डेय, नमिसाधु आते हैं।


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नामिसाधु ने जहाँ अपभ्रंश के तीन भेद (क) उपनागरी (ख) आभीर (ग) ग्राम्य में बांटा वो मार्कण्डेय ने (क) नागरी (ख) उपनागरी एवं ब्राचड. अपभ्रंश में बांटा। डॉ० नामवर सिंह ने इन उपभेदों में नामिसाधु के उपनागरी एवं मार्कण्डेय के नागरी को एक बताकर इसे 'परिनिष्ठित अपभ्रंश' नाम दिया।

एक अन्य विश्लेषक डॉ. तगारे ने अपभ्रंश को पूर्वी (म.प्र का पूर्वी भाग - सिद्ध रचनाएँ), पश्चिमी (पश्चिमी भाग - जैन रचनाएँ) एवं दक्षिणी भागों में बांटा है, जो भी एक महत्वपूर्ण वर्गीकरण माना जाता है।

इस प्रकार प्रामाणिक साक्ष्यों के अभाव में इस प्रकार का वर्गीकरण संभावित तो माना जा सकता है परंतु अंतिम नहीं। अंतिम वर्गीकरण हेतु और अधिक भाषावैज्ञानिक साक्ष्यों की आवश्यकता होगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'दक्खिनी हिंदी' के प्रयोग-क्षेत्र बतलाते हुए 'दक्खिनी हिंदी' की भाषागत विशेषताओं का उद्घाटन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दक्खिनी हिंदी पश्चिमी हिंदी उपभाषा की एक प्रमुख बोली है जिसका उद्भव उत्तर भारत की खड़ी बोली एवं अरबी, फारसी परंपराओं के साथ-साथ दक्कन क्षेत्र की स्थानीय बोलियों जैसे - मराठी, कन्नड़ आदि के मिश्रण से हुआ है। यह भाषा ध्वनि की दृष्टि से खड़ी बोली, लिपि की दृष्टि से अरबी से प्रभावित है एवं प्रकृति में सामासिक है।

प्रयोग क्षेत्र की दृष्टि से दक्खिनी का प्रयोग क्षेत्र महाराष्ट्र के अहमदनगर, बरार, बीदर, गोलकुंडा, बीजापुर एवं हैदराबाद के आसपास का क्षेत्र शामिल है। गौरतलब है कि अलाउद्दीन खिलजी के दक्षिण भारतीय अभियानों एवं मुहम्मद बिन तुगलक के दिल्ली से दौलताबाद राजधानी स्थानान्तरण के कारण उत्तर-दक्षिण संपर्क के कारण ही दक्खिनी का जन्म हुआ है अतः प्रभाव क्षेत्र भी इन्हीं कारकों से प्रभावित है।

इसके अन्य नाम, हिन्दवी, देहलवी,


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

गूजरी, हैदराबादी भी है। इसमें 'गूजरी' मुख्यतः गुजरात के मुहम्मद कादिर शाह के साहित्य में विद्यमान है।

~~वि~~ दक्खिनी हिंदी की भाषागत विशेषताएँ:

I क ध्वनि संबंधी विशेषताएँ

(क) इसमें खड़ी बोली या मूल हिंदी के सभी स्वर एवं व्यंजन विद्यमान हैं परन्तु 'ग़' एवं 'फ़' के अत्यधिक प्रयोग की प्रवृत्ति विद्यमान है।

(ख) 'ड़' का 'ड' में प्रयोग करना।
पड़ा - पडा

(ग) शब्द के मध्य स्थित व्यंजनों के विपर्यय की प्रवृत्ति - कीचड़ - चीकड़
मतलब - मतबल

(घ) महाप्राण का अल्पप्राणित्व
मुझे - मुजे

(ङ) 'म्ब' का 'म्म' में परिवर्तन
गुम्बज - गुम्मज

(च) 'न्थ' या 'न्द' का न में परिवर्तन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

चाँदनी = चाननी

<u>व्याकरण संबंधी विशेषताएँ :</u>

(क) संज्ञा शब्दों में स्वरांत एवं अकरांत की प्रवृत्ति दिखलाई पड़ती है।

(ख) <u>सर्वनाम :</u>
उत्तम पुरुष - मुज, मुजे
मध्यम पुरुष - तुम, तुमें
अन्य पुरुष - वो, वह
अन्य सर्वनाम - अइस, जइस

(ग) <u>वचन :</u> बहुवचन बनाने के लिए 'मन' आदि प्रत्ययों का प्रयोग जैसे 'हममन'

(घ) <u>लिंग व्यवस्था :</u> लिंग व्यवस्था में स्त्रीलिंग विशेषण भी पूर्णतः विकारी हैं।
'जम्हाईयाँ लेतियाँ लड़कियाँ'

(ङ) <u>कारक व्यवस्था</u>
कर्त्ता - ०, ने, नै
कर्म - को, कूँ
करण - सूँ, सैं
सम्प्रदान - वास्ते, खातिर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

क्रिया ~~व्य~~ व्यवस्था :- क्रिया में सहायक क्रियाओं में 'ह' शब्द की प्रधानता है।
वर्तमान काल - त रूप
भविष्य काल - ह रूप,
भूतकाल - ला रूप

इस प्रकार दक्खिनी एक प्रमुख बोली है जो अपनी सामासिक प्रवृत्ति के कारण उल्लेखनीय है। इन्हीं विशेषताओं के कारण यह उर्दू के विकास में भी योगदान दे पाई।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) प्रारंभिक हिंदी की व्याकरणिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

'प्रारम्भिक हिंदी' आधुनिक आर्यभाषाओं का प्रथम चरण है जिसका शुभारम्भ लगभग 12 वीं शताब्दी से प्रारम्भ होता होता है यह भाषा हिंदी की लगभग सभी बोलियों के विकास की पूर्वपीठिका बनी। इसे 'पुरानी हिन्दी' नाम 'चन्द्रधर शर्मा गुलेरी' जी द्वारा दिया गया।

पुरानी हिन्दी की व्याकरणिक विशेषताएँ :-

ध्वनि के स्तर पर

(क) व्यंजनमाला - इसमें 'श' व 'ष' को छोड़कर हिंदी के सभी व्यंजन विद्यमान हैं।

(ख) स्वरमाला :- सभी स्वर विद्यमान, साथ ही ऐ व औ का भी व्यापक प्रयोग

(ग) स्वरांत की प्रवृत्ति का विकास
महान - महा

(घ) स्वर भक्ति :- प्रदेश - परदेस

(ङ) संयुक्त व्यंजनों का द्वित्वीकरण एवं क्षतिपूर्ति दीर्घीकरण की प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है।
कर्म → कम्म → काम



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(च) 'क्ष' का प्रयोग दो रूपों में
'ह' रूप - पूर्वी हिन्दी - लक्ष्मण - लहमन
'ख' रूप - पश्चिमी हिन्दी - लक्ष्मण - लखन

(छ) स्वरलोप की प्रवृत्ति का विकास हुआ।
इकट्ठा - कट्ठा

## व्याकरण के स्तर पर विशेषताएँ

(क) संज्ञा व कारक के स्तर पर :- सभी संज्ञा शब्द स्वरांत एवं आकारांत हो गये एवं व्यंजनांतता प्रायः लुप्त हो गई।
जगत् - जग
⇒ कारकों में निर्विभक्तिक प्रयोग हो रहे थे, साथ ही प्रमुख परसर्गों का भी विकास हुआ जैसे 'हि' परसर्ग (मूलतः अपभ्रंश में हिं) का और प्रयोग हुआ।
मणहि, जलहि

(ख) सर्वनाम :- हिन्दी के लगभग सभी सर्वनामशब्द मिलने लगते हैं - वे, कौन, जइस, कैसो आदि।

(ग) लिंग व्यवस्था :- स्त्रीलिंग शब्द 'इकारांत'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

होने लगे। यह पुरानी हिंदी की प्रमुख विशेषता मानी जाती है।

(घ) वचन व्यवस्था
- पुल्लिंग एकवचन से बहुवचन- 'अन' व 'ए' प्रत्यय- बेटा - बेट, बेटन
- स्त्रीलिंग एकवचन से बहुवचन- 'अन', 'न्ह', 'नी' प्रत्यय- सखिअन, वीविन्ह, पुहुपन्हि आदि।

(ङ) विशेषण :- इदंत विशेषणों का विकास, संख्यावाची विशेषणों का और अधिक विकास एक, आठ, बारह आदि।

(च) क्रिया व्यवस्था :- इदंत के साथ-साथ संयुक्त क्रियाओं का विकास- देखि जाअ, डरि गलि, करत, देखत।
- क्रियार्थ संज्ञाओं या संबंधार्थ क्रियाओं में 'ण' प्रत्यय की बहुलता- देखण, चलण

इस उपर्युक्त विशेषताओं के द्वारा पुरानी हिंदी ने आज की मानक हिंदी के विकास में योगदान दिया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मध्यकाल में काव्यभाषा के रूप में अवधी के विकास पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पूर्वी हिन्दी की सबसे प्रमुख भाषा 'अवधी' का विकास में मध्यकाल एवं उसमें भी भक्तिकाल का प्रमुख योगदान है। वैसे तो रोडा कृत 'राउरवेल' एवं अमीर खुसरो की 'खलिकवारी' में अवधी का आरंभिक परिचय प्राप्त होता है परन्तु, अवधी का सर्वोच्च विकास मध्यकाल की देन है।

दरअसल, हुआ यूँकि मध्यकाल में एक संयोग के रूप में सूफी संतों की प्रेमाश्रयी कविताओं में अवधी भाषा में दोहा- चौपाई की कडवकबद्ध शैली रूढ़ हो गई। इस संयोग का लाभ अवधी भाषा को प्राप्त हुआ।

सर्वप्रथम 1379 में 'मुल्ला दाऊद' ने 'चंदायन' या 'लौरिहका' की रचना का अवधी को एक झटके में ही जनभाषा से साहित्यभाषा के रूप में स्थापित कर दिया।

सूफी संतों में अवधी के विकास में जायसी जी का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने अपनी रचनाओं में (पद्मावत, अखरावट, आखिरी

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कलाम) में ठेठ अवधी की मिठास को उभारा है। पद्मावत की अवधी में कुछ ~~प्राकृताभ~~ प्राकृतापभ्रंश शब्द, तद्भव शब्दों का अवधीकरण (तद्भव + ऊ), लोक शब्दों का प्रयोग (दवंगरा, महावट), लोक मुहावरे (हिय फटा) आदि खुलकर आये हैं। उदा०

"यह तन जारौं छार कै, कहौं कि पवन उड़ाव,
मकु तेहि मारग उड़ि परै, कंत धरै जहँ पाँव"

जायसी के बाद अवधी में तत्सम शब्दों की बहुतायत मिलने लगती है। यद्यपि कुछ सूफी संतों का नाम (कासिम शाह, शेख नबी) उल्लेखनीय है, परंतु अवधी के विकास में तुलसीदास का योगदान अतुलनीय है।

तुलसी ने संस्कृत शब्दों का ~~तद्भव~~ अवधीकरण करते हुए भाषा का ~~सामा~~ समाहार किया है जैसे - अमृत - अमिय, वन - बन।

उदा०-
"लोचुन जल रह लोचन कोना
ज्यों परम कृपन कर सोना"

इस प्रकार तुलसी ने न केवल संस्कृत शब्द


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपितु अरबी-फारसी शब्द ('राम' हेतु गरीबनेवाज़ शब्द का प्रयोग) एवं लोक शब्दों का प्रयोग करते हुए अवधी के साहित्यिक प्रभाव में वृद्धि की।

तुलसी की अन्य विशेषताओं में उनकी 'ध्वनि मैत्री' योजना (सिपिल अंग, पग मग डग डोलहिं), अनुप्रास का सुंदर प्रयोग (जलचर, थलचर, नभचर नाना), लोक बिंबों का जबरदस्त प्रयोग आदि प्रमुख विशेषताएँ जान पड़ती हैं।

इस प्रकार मध्यकाल में अन्य कवियों के साथ तुलसी एवं जायसी का योगदान अवधी के विकास में एक कदम न होकर एक 'लीप या छलांग' है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

## Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) रामस्वरूप चतुर्वेदी के साहित्येतिहास-लेखन की विशेषताएँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उ० रामस्वरूप चतुर्वेदी ने अपनी पुस्तक 'हिंदी साहित्य एवं संवेदना का विकास' के द्वारा हिंदी साहित्येतिहास के क्षेत्र में कदम रखा।

इनकी प्रमुख विशेषताओं में सबसे प्रमुख है - शुक्ल जी के विधेयवादी तत्व एवं द्विवेदी जी के परंपरावादी तत्व का संयोजन करना। मूलतः शुक्ल जी की इतिहास दृष्टि पर रहते हुए भी पुस्तक के ~~विकास~~ नामकरण में 'विकास' शब्द द्वारा उन्होंने यह बताया कि इतिहास हमेशा पुरानी स्थितियों से ही विकसित होता है।

अन्य विशेषताएँ

(क) साहित्य एवं कला के संबंध पर विचार करते हुए बिहारी के दोहों व उर्दू के शायरी से तुलना की

(ख) भारतीय संस्कृति की समन्वयवादी प्रवृत्ति के कारणों में इस्लाम का आगमन के कारण पर विचार कर भारतीय संस्कृति के


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राम एवं कृष्ण के मिथकों का सहारा लिया।

(ग) गद्य एवं पद्य की भाषा की भिन्नता पर विचार किया और बताया कि कविता भावनाओं से पैदा होती है अतः भाषा सरल होगी एवं गद्य सुस्पष्ट चिंतन से अतः भाषा तत्समीकृत एवं क्लिष्ट होगी।

(घ) इतिहास में भारतीय दर्शन एवं चिंतन का समावेश भी किया।



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space) --

(ख) मनोवैज्ञानिक कहानी का परिचय

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचंदोत्तर युग की दो प्रमुख धाराओं (प्रगतिवाद एवं मनोवैज्ञानिक धारा) में मनोवैज्ञानिक धारा का प्रमुख स्थान है। यूँ तो प्रेमचन्द ने भी कहानियों में मनोविज्ञान को उभारा है परन्तु यहाँ उसका व्यवस्थित रूप से अंकन, विश्लेषण किया गया है।

मुख्यतः पश्चिमी विचारक फ्रॉयड के विचारों पर प्रभावित यह धारा जीवन की सभी समस्याओं में सबसे प्रमुख 'लिबिडो' या 'काम चेतना' को मानती है।

इस धारा की कहानियों में भी व्यक्ति का अध्ययन उसके चेतन स्तर पर न कर अवचेतन के स्तर पर किया गया है। इस कारण कहानी का कथानक अन्तर्मुखी हो गया है। इन कहानीकारों की प्रमुख कोशिश रहती है कि व्यवस्थित चिंतन कर व्यक्ति के चेतन व अवचेतन मन की काँक को पाठकों तक पहुँचा दे जिससे पाठक भी अपने मन की तहों को खंगाल सके।

शिल्प के स्तर पर कहानी में अन्तर्मुखी कथानक, घटनाओं की विरलता,



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पात्रों की सूचना दिखाई पड़ती है। प्रमुख वर्णन घटनाओं का न होकर व्यक्ति के आंतरिक मन का होता है।

अन्तर्भूत अनुभूतियों के वर्णन के कारण भाषा भी प्रतीकात्मक हो जाती है एवं कहानी में चेतना-प्रवाह, प्रत्यवावलोकन, फन्तासी, पूर्वदीप्ति जैसी शैलियाँ बहुतायत में पाई जाती है।

इस धारा के प्रमुख कहानीकार जैनेन्द्र (खेल, पाजेब), इलाचन्द्र जोशी एवं अज्ञेय (परंपरा, जयदोल, पठार का धीरज) आदि हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) संतकाव्यधारा और सूफीकाव्यधारा की भिन्नताएँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

| संतकाव्यधारा | सूफीकाव्यधारा |
|---|---|
| **संवेदना के स्तर पर** | |
| (क) मुख्यतः निर्गुण ब्रह्म की उपासना पर बल। नाथ, अद्वैत एवं विभिन्न मतों का प्रभाव | (क) इनकी पद्धति का मूल आधार तसव्वुफ़, जो इश्क मज़ाजी एवं इश्क-हकीकी के द्वारा प्राप्त होगा। |
| (ख) सामाजिक विशेषताओं जैसे रूढ़ीवाद, सांप्रदायवाद पर फटकारने के द्वारा चोट | - संप्रदायवाद आदि पर प्रेम पर बल देकर समन्वयवादी प्रवृत्ति के द्वारा चोट<br>"मानुष प्रेम भएउ बैकुंठी" |
| (ग) साधनात्मक रहस्यवाद की उपस्थिति | - भावनात्मक रहस्यवाद की उपस्थिति |
| (घ) हठयोग पर बल | - ऐसा नहीं |
| (ङ) इनका गुरु केवल मनुष्य हो सकता है | - मनुष्य के साथ-साथ पशु पक्षी भी |
| **शिल्प के स्तर पर** | |
| (क) सधुक्कड़ी भाषा | - ठेठ अवधी |
| (ख) संधा भाषा का प्रयोग | - ऐसा नहीं |



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

| | |
|---|---|
| "कबीर की अमृतवाणी, बरसे कंबल भीजे पानी" | |
| (ग) शिल्प का आग्रह नहीं | - शिल्पगत आग्रह, अलंकार आदि से युक्त |
| (घ) मुख्यतः मुक्तक काव्य | - लगभग सभी प्रबंध काव्य |
| (ङ.) प्रतीक, बिम्ब आदि का कम प्रयोग | - बहुतायत में प्रयोग |
| **प्रमुख व्यक्तित्व** | |
| कबीर, दादू, गुरुनानक, रैदास, सुंदरदास आदि | - मुल्ला दाऊद, जायसी, कुतुबन आदि |



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) आंचलिक कहानी

अंचल की स्थानिक विशेषताओं का पुट लिये लिखी जाने वाली कहानी
- लोक तत्वों की भरमार
- लोक शब्दों का प्रयोग
→ लोक संगीत
→ देश काल का पूर्णतः बोध

कुछ हद तक प्रेमचन्द की कहानियाँ मानी जा सकती हैं।
मुख्यतः फणीश्वरनाथ रेणु के मैला आँचल उपन्यास के बाद कहानी क्षेत्र में उद्भव


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) इप्टा

इप्टा अर्थात 'इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन' का विकास भारतीय स्वतंत्रता से पहले 1943 में किया गया था। इसका नामकरण मुख्यत: 'रोमां रोलां' की की पुस्तक 'पीपुल्स थियेटर' के नाम पर किया गया था।

एक व्यवसायिक रंगमंच के रूप में इस संस्था से अनेक प्रमुख वामपंथी एवं प्रगतिवादी लेखक जुड़े हुए थे जैसे- रांगेय राघव, उपेन्द्रनाथ अश्क आदि। वस्तुत: इस नाटक मण्डली द्वारा प्रमुखत: गरीब वर्गों की समस्याओं, उत्पीड़न, श्रमिक समस्याओं आदि को उठाया जाता था और देश के विभिन्न भागों में उनका मंचन किया जाता था। 'कैफी आजमी' जैसे अभिनेता भी इसी थियेटर से जुड़े हुए थे।

'बलराज साहनी' इस संस्था के प्रमुख अभिनेता थे। 1945 से 1960 तक इस संस्था ने देश के अनेक हिस्सों में निम्न वर्गों से संबंधित नाटकों की

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुति की। इस संस्था का विकास और ठहराव के साथ आज भी जारी है।


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) हिंदी साहित्येतिहास-लेखन-परंपरा में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का योगदान अप्रतिम है लेकिन उसकी कई सीमाएँ भी हैं। विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

डॉ० रामचन्द्र शुक्ल ने नागरी प्रचारिणी सभा के एक ग्रन्थ हिन्दी शब्द सागर की भूमिका के रूप में अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' लिखी। पुस्तक की भूमिका में उन्होंने लिखा कि -

"चूंकि प्रत्येक भाषा का साहित्य वहाँ की जनता की चितवृत्तियों का संचित प्रतिबिम्ब होता है अतः जनता की चितवृत्तियों में परिवर्तन के साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता चला जाता है। अतः इन परिवर्तनों का साहित्यिक प्रवृत्तियों के सामंजस्य बिठाकर अध्ययन करना ही हिंदी साहित्य का इतिहास कहलाता है"

शुक्ल जी के साहित्येतिहास की प्रमुख विशेषताएं

(क) इतिहास दृष्टि :- शुक्ल जी की इतिहास दृष्टि मुख्यतः 'प्रत्यक्षवाद' या 'विधेयवाद' से प्रभावित है जो कि पश्चिमी विचारक 'तेन' से प्रभावित है। इसके अनुसार किसी भी ~~रचना~~ रचना 'जाति', 'वातावरण' एवं 'रचना का क्षण' से



641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रभावित होती है।

(ख) लोकमंगलकारी दृष्टि :- शुक्ल जी ने पारंपरिक कलावादी एवं आधुनिक समाजनिष्ठ पद्धति का मिश्रण ~~कर~~ ~~आधु~~ अपनी लोकमंगलकारी दृष्टि प्रस्तुत कर हर रचना का मूल्यांकन इसके अनुरूप किया।

(ग) उन्होंने रचनाकारों के जीवनवृत्त को महत्व न देकर साहित्यिक कृतियों को महत्व दिया।

(घ) इन्होंने प्रबंधकाव्य, सगुण भक्ति के प्रति अतिरिक्त आग्रह बनाये रखा।

(ङ.) शुक्ल जी ने रचना के संप्रेषण में बाधक तत्वों जैसे प्रतीक, बिम्ब आदि पर कटाक्ष किया। 'बुद्धिप्रेरित वक्रता' का इन्होंने विरोध किया।

(च) नामकरण :- शुक्ल जी ने हिंदी का उद्भव 7वीं शताब्दी से मानते हुए भी हिंदी साहित्येतिहास को 1050 संवत. से माना क्योंकि उससे पहले की सिद्ध-नाथ रचनाएँ उनकी नजरों में साम्प्रदायिक थी। उनका नामकरण व काल विभाजन इस प्रकार है

वीरगाथाकाल - 1050-1375 संवत-



Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भक्तिकाल - 1375 - 1650 संवत.
रीतिकाल - 1650 - 1850 संवत.
आधुनिक काल - 1850 - आधुनतन संवत.

इस प्रकार उन्होंने नामकरण व कालविभाजन की समस्या का एक शब्द में समाधान कर दिया।

शुक्ल जी की सीमाएँ :-

(क) सर्वप्रथम इन्होंने 'परंपरा तत्व' एवं साहित्यकार के अस्तित्व को महत्व नहीं दिया। जिस प्रकार पश्चिम में 'तेन' का खंडन एडसन ने किया वहीं भारत में शुक्ल जी' के मतों का खंडन आचार्य 'हजारी प्रसाद द्विवेदी' ने किया। शुक्ल जी ने कबीर की अक्खड़ता पर इस्लामी एकेश्वरवाद का प्रभाव बताया तो द्विवेदी जी ने कबीर पर नाथपंथ का प्रभाव बताकर शुक्ल जी का खंडन किया। इसके अलावा भक्ति आंदोलन के उद्भव पर इस्लाम के प्रभाव की 'हताशा' को प्रमुख बताया तो द्विवेदी जी ने परंपरा से जोड़कर इसे 'जिजिविषा' का साहित्य बताया।

(ख) शुक्ल जी ने सिद्ध-नाथों की रचनाओं को सांप्रदायिक मानकर उन्हें साहित्य में नहीं माना। आगे चलकर द्विवेदी जी ने कहा कि



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

यदि सिद्ध नाथ साहित्य को साहित्य नहीं मानेंगे तो सम्पूर्ण भक्ति काल को इतिहास से बाहर करना पड़ेगा।

(ग) शुक्लजी ने केवल दो रचनाओं के आधार पर आदिकाल का नामकरण 'वीरगाथाकाल' कर दिया।

(घ) शुक्ल जी का भक्तिकाल का विभाजन भी उचित नहीं है सूफी कवियों की रचना पर फारसी प्रभाव बताये जाने की शुक्ल जी के निष्कर्षों का खंडन आगे चलकर गणपतिचन्द्र गुप्त ने किया।

(ङ) प्रबंध, सगुणभक्ति, पर अतिरिक्त आग्रह के कारण कबीर का उचित मूल्यांकन नहीं किया। द्विवेदी जी ने कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' बताया।

इस प्रकार उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद शुक्ल जी का हिन्दी साहित्येतिहास में सर्वोच्च योगदान है उन्होंने बिखरी हुई इतिहास परंपरा को एक क्रम में व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक रूप दिया। आगे का सारा इतिहास शुक्ल के प्रभाव का ही अनुभव करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)


Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) दलित-जीवन की अभिव्यक्ति की दृष्टि से हिंदी कहानी पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिंदी कहानी में दलित जीवन की अभिव्यक्ति दो रूपों में दिखलाई पड़ती है। प्रथम समूह में वे रचनाकार आते हैं जो स्वयं उच्च जाति के थे परन्तु जिन्होंने 'संवेदना' की द्वारा दलितों की पतित स्थिति का अनुभव कर रचनाकर्म किया। इस परंपरा में स्वतंत्रतापूर्व प्रेमचन्द का नाम उल्लेखनीय है तो स्वतंत्रता पश्चात ~~ओम~~ राजेन्द्र यादव, मार्कण्डेय, यशपाल, नागार्जुन आदि लेखकों का।

प्रेमचन्द ने मंत्र, ठाकुर का कुंआ, दूध का दाम ~~व~~ सद्गति जैसी रचनाओं में दलित वर्ग के शोषण का चित्रित किया है परन्तु यहाँ दलितों की विद्रोही चेतना का दर्शन नहीं होता। इसी प्रकार मार्कण्डेय की 'हलयोग', उदयप्रकाश की 'टेपचू', राजेन्द्र यादव की 'दो दिवगंत' प्रमुख हैं। ये कहानी प्रेमचन्द की कहानियों का अगला चरण प्रतीत होती है

वास्तविक दलित साहित्य उन दलित रचनाकारों द्वारा लिखे गये साहित्य


641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को मानते हैं, जिनका विचार है कि 'संवेदना' चाहे कितनी भी बड़ी हो, वह 'स्वयं वेदना' के समकक्ष नहीं हो सकती। ये रचनाकार अंबेडकर की विचारधारा से प्रभावित हैं जो दलितों का विकास कर उन्हें शिक्षित कर संघर्ष हेतु प्रेरित करती है।

दलित रचनाकारों में प्रमुख नाम मोहन-दास नैमिशराय, ओमप्रकाश वाल्मीकि, जयप्रकाश कर्दम, सूरजपाल चौहान आदि प्रमुख हैं। इन्होंने अपनी कहानियों जैसे 'अपना गांव' (मोहनदास जी), सलाम (जय कर्दम) आदि के द्वारा संगठन क्षमता एवं पर बल एवं प्राचीन दलित विरोधी परंपराओं पर सवाल खड़े करते हैं। इसके अतिरिक्त ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'चमार' व 'लाठी' भी स्वतंत्रता पश्चात् दलितों की दयनीय दशा का वर्णन करती है।

दलित महिला लेखकों में रजत रानी मीनू, सुमित्रा मेहरोल, उषा चक्रा प्रमुख हैं

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जो कि उच्च जातियों का निम्न जातियों पर अत्याचार का विरोध एवं स्वयं दलितों की पितृसत्तावादी मानसिकता का विरोध करती हुई कहानियाँ लिखती हैं।

प्रमुख कहानियों में सुनीता (रजत रानी मीनू), लोकतंत्र में बकरी (उषा चन्द्रा) एवं नन्हीं (सुमित्रा मैहरोल) प्रमुख हैं। इन रचनाओं का शिल्प के प्रति आग्रह नहीं है बल्कि एक सहज सरल भाषा में अपनी बात अपने वर्ग तक पहुँचा संघर्ष चेतना का आह्वान करना इनका लक्ष्य है। इसके हेतु वे प्रेमचन्द जैसे रचनाकारों पर भी अपने निष्क्रिय दृष्टिकोण हेतु अंगुली उठाते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पारसी रंगमंच की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

पारसी रंगमंच ~~उन्नीसवीं~~ 19वीं शताब्दी में कलकत्ता व मुंबई जैसे नगरों में उदित हुए एक व्यवसायिक रंगमंच था जिसने अपनी मूलभूत विशेषताएँ विकसित करते हुए हिंदी रंगमंच को नई दिशा दी। यह इतना लोकप्रिय था कि इसके विरोध में नाट्यकर्म करने वाले भारतेन्दु व प्रसाद जैसे नाटककार भी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके।

प्रमुख विशेषताएँ

(i) रोमांचकता की अधिकता -

मंच पर पशु-पक्षी, उड़ते हुए मनुष्य आदि का ~~चित्र~~ प्रदर्शन

(ii) रंगीय सज्जा पर अत्यधिक बल

(iii) पर्दों व यवनिका पर आधारित मंच - पर्दों पर भड़काऊ चित्र होते थे जो दर्शकों को आकर्षित करते थे।

(iv) हिंदी पुराणों, आख्यानों का मंचन



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसे - वीर अभिमन्यु, लैला मजनूँ, अमानत (प्राणचन्द चौहान)

(v) इसका मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना था अतः दर्शकों को आकर्षित करने हेतु अनेक प्रयोग
→ गीतों की बहुलता
→ रोमांचित दृश्यों की बहुतायत
- संगीत की बहुलता

(vi) हिंदी लोकनाट्यों की शैलियों का भी पर्याप्त मिश्रण था।

(vii) सांस्कृतिक चेतना के वाहक न होकर केवल मनोरंजनात्मक दृष्टि से मंचन

इस प्रकार यह रंगमंच अपनी उपर्युक्त विशेषताओं के कारण 19वीं 20वीं शताब्दी में छाया रहा और सिनेमा के आगमन के कारण ही इसका प्रभाव जनसामान्य पर कम हुआ।



दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation